शोध-प्रारुप

हासादाः मुण्डारी का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु शोध प्रस्ताव

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रस्ताव

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, (स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग),

राँची विश्वविद्यालय, राँची

2024

शोध निर्देशक

डा. अजीत मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग,
रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

विशेश्वर मुण्डा
यूजीसी नेट/सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग,
सिमडेगा महाविद्यालय, सिमडेगा
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना

मुण्डा जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है। जो प्राचीन काल से ही भारत के कई भागों में निवास करती आ रही है। इनकी अपनी भाषा है, जिसे मुण्डारी भाषा कहा जाता है। यह प्रोटोआॅस्ट्रोलाॅयड प्रजाति की उपशाखा है तथा आॅस्ट्रिक भाषा परिवार की उपभाषा मुण्डारी का व्यवहार करती है। मुण्डारी भाषा को मुण्डारी में ‘होड़ो जागार’ कहते हैं। होड़ो का अर्थ ‘मनुष्य’ और जागार का अर्थ - भाषा। इस प्रकार इसे मानव की भाषा कहा जा सकता है।

मुण्डारी भाषा आॅस्ट्रिक कुल की प्रमुख व प्राचीन भाषाओं में से एक है। विद्वानों ने इसे संस्कृत के समकालीन या उससे भी प्राचीन माना है। मुण्डा कुल की भाषाओं जैसे - संताली, हो, खड़िया, असुरी, बिरहोरी, इत्यादि की जननी मुण्डा भाषा है। “एच रिजले लिखते हैं, “मुण्डा जाति भारत की सर्वप्रथम वासिन्दा है। उनका मत है कि मुण्डा जातियाँ जिनमें - संताल, हा,े खड़िया, भील आदि इसी भाषा की सभी आदिवासी जातियाँ भारत भूमि के मौलिक आदिवासी हैं।” 6 वीं शताब्दी ई.पू. यह भाषा सम्पूर्ण छोटानागपुर में राजकीय भाषा हुआ करती थी। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि मदरा मुण्डा के राजधानी के आसपास की सभी जातियां जैसे उरांव और अन्य केवल मुण्डारी भाषा का ही प्रयोग करते थे। भाषाविद् डाॅ. रामदयाल मुण्डा का यहां तक मानना है “ आर्य द्रविड़ पूर्व किसी समय आॅस्ट्रिक कुल की मुण्डारी भाषा सारे भारत की भाषा रही होगी और सिन्धु घाटी तथा इसके पहले की सभ्यताओं के निर्माण में इन्हीं भाषा-भाषी लोगों का हाथ रहा होगा।” मुण्डारी भाषा के बोलनेवालों की संख्या सबसे ज्यादा झारखण्ड में ही है। मुण्डा समुदाय और मुण्डारी भाषा एक शरीर के ही अंग हैं।

भाषायी विद्वान पी. पोनेट के अनुसार, “मुण्डा जनजाति की भाषा मुण्डारी है। जो अपने साथ चार-चार अर्थ ढोता है मुण्डा - ग्राम प्रमुख, जाति समुदाय, मुण्डा भाषा एवं आग्नेय परिवार के मुण्डा कुल की भाषाओं का मूल स्वरूप। इस भाषा समुदाय के बोलनेवाले मुख्य रूप से हिमालय की तराई, भारत के मध्य पहाड़ी क्षेत्र तथा पंजाब के पहाड़ी इलाकों में निवास करते हैं। भारत के बाहर दक्षिण पूर्व एशिया जो सम्भवतः मेडागास्कर होते हुए इण्डोनेषिया, मलेिशया, पोलिनेषिया और दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी भागों तक फैले हुए हैं।”

प्रजातीय एवं भाषायी दृष्टिकोण से “प्रोटोआॅस्ट्रोलाॅयड” समूह की भाषा है की अपनी स्वतंत्र व्याकरण एवं विशेषताएं हैं। विकीपिडीया/मुण्डारी भाषा के आधार पर वर्तमान में मुण्डारी भाषा बोलने वालों की संख्या पूरी दुनिया में 20 लाख 74 हजार 400 है। इनका सघन वास स्थल झारखण्ड राज्य है। इसके अलावे बिहार, प0 बंगाल, उड़ीसा, छŸाीसगढ़, असम आदि राज्यों में भी यह भाषा व्यवहृत होती है।

वर्तमान में मुण्डाओं का वास स्थान झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ पश्चिम बंगाल, उत्तरांचल, बिहार तथा असम आदि राज्यों में है, परन्तु मूल रूप से झारखण्ड के राँची, खूँटी, पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा, गुमला, हजारीबाग आदि जिलों में अवस्थित है। चुंकि लिखित दस्तावेजों में मुण्डाओं के बारे में जो भी प्रमाण दिये गए हैं उनमें कई विद्वानों ने आगन्तुक के रूप में चिन्हित किया है। परन्तु कुछ विद्वानों ने भारत की सबसे प्राचीन जाति माना है। डाॅ. परिमल मित्रा का मानना है कि भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में एक समय मुण्डा समुदाय या भाषा-भाषी लोगों का वर्चस्व रहा होगा। उदाहरण के तौर पर उन्होंने जो शहरों का नामकरण यहां तक कि भारत का नाम भी इसी जाति समुदाय की देन के रूप में चिन्हित किया है। जैसे भारत त्र भाऱओऱओत।(भार से ढोकर बनाया गया देश)। इसका सशक्त प्रमाण ‘छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम के ‘खुंटकटी’ को माना जा सकता है जो अपने आपमें अनूठा है।

मुण्डारी भाषा जैसा कि इतिहास में उल्ल्ेाखित है छोटानागपुर की राज भाषा हुआ करती थी। अन्य सम्पर्क भाषाओं के आने से इसके व्यवहार में कमी आयी परन्तु वर्तमान समय में भी इसकी संख्या अत्यधिक है। मुण्डारी भाषा अंगे्रजों के आने के बाद शोध का माध्यम बना और उस समय यह रोमन में लिखी जाने लगी। वर्ततान में अधिकतर देवनागरी में लिपि में लिखी जाती है। मुण्डारी भाषा पर अनेक विद्वानों ने कार्य किया है एवं अबतक इनपर कार्य जारी है। सर्वप्रथम जाॅन हाॅफमैन ने ‘‘इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका (टवस.16ए 1950)‘‘ के नाम से वृहत विष्वकोष तैयार किया। यह अबतक का सबसे बड़ा शब्दकोश कहा जा सकता है। इसके बाद उन्हीं का ‘मुण्डारी ग्रामर एवं एक्सरसाईज‘ (2001) पुनर्मुद्रण हुआ। मुण्डारी भाषा में राखालदास हलदार द्वारा ‘एन इण्ट्रोडाॅक्सन टू दि मुण्डारी लैंग्वेज‘ 1919, जाॅर्ज ग्रियर्सन द्वारा लिंग्विस्टिक सर्वे आॅफ इण्डिया, 1967 (पुनर्मुद्रण) ह्विटली जे.सी. ‘मुण्डारी प्राइमर’ 1873, नाॅर्मन जाइड द्वारा ‘स्टडीज इन द मुण्डा नुमेरल्स’ 1978, रामदयाल मुण्डा ‘मुण्डारी व्याकरण’ 1988, ‘प्रोटोखेरवारियन फोनेटिक सिस्टम’ 1968, द मुण्डारी वर्व, मनमसीह मुण्डू ‘मुण्डारी टुड्कोढारि’ 1995, ए. नोत्रोत ‘ग्रामर आॅफ द कोल लैंग्वेज’ 1905, सी. ए. हंस ‘टीच योरसेल्फ मुण्डारी’ स्वर्णलता प्रसाद, ‘हिन्दी मुण्डारी शब्दकोश, 1976, आदि के अलावे कई विद्वानों ने भाषा पर काम किया है। राष्ट्रीय भाषा संस्थान मैसूर से कई पत्रिकाएं मुण्डारी भाषा के ध्वनिशास्त्र एवं शब्द विज्ञान पर छप चुकी है।

मुण्डारी भाषा वर्तमान झारखण्ड में कई रूप में पाई जाती है अर्थात् इसकी उपबोलियां मुख्यतः चार हैं-

1.हासादाः मुण्डारी जो खूंटी जिले एवं इसके नजदीकी क्षेत्रों में बोली जाती है।

2.लातार मुण्डारी- तमाड़ एवं पंचपरगना क्षेत्र में व्यवहृत होने वाली बोली है।

3.नागुरी मुण्डारी- यह खूंटी के पश्चिमी भाग तथा तोरपा कोलेबिरा से सिमडेगा तक कही जाती है।

4.केराः मुण्डारी - केराः मुण्डारी का क्षेत्र रांची जिला के आसपास का है। इस बोली को मुण्डाओं के साथ अधिकांश उरांव लोग प्रयोग में लाते हैं।

मुण्डारी भाषा के उपबोलियों में सबसे अधिक या पूर्ण रूप से हासादाः मुण्डारी का प्रयोग मौखिक एवं लिखित रूप में व्यवहृत होती है। हासादाः को मुण्डारी का मौलिक रूवरूप कहना अत्योक्ति नहीं होगी। चुंकि हासादाः मुण्डारी में अन्य भाषाओं का प्रभाव बहुत कम या नहीं के बराबर मिलता है। पूर्व के सभी विद्वानों द्वारा हासादाः मुण्डारी को ही लिखित रूप में अपनाया गया है। हालांकि क्षेत्र के आधार पर सभी उपबोलियों का व्यवहार हमेशा से होता आ रहा है।

हासादाः का क्षेत्र खूंटी जिले के पूर्वी क्षेत्र खूंटी प्रखण्ड अंतर्गत माराङहादा, कुजराम, तक, सोयको तथा समूचा अंड़की प्रखण्ड एवं मुरहू प्रखण्ड के पूर्वी क्षेत्र को माना गया है। प्रस्तावित शोध अध्ययन में का कार्य क्षेत्र इन स्थानों पर अपेक्षित होगा।

शोध की प्रेरणा -

मुण्डारी भाषा एवं साहित्य हमेशा से मेरा रूचिकर विषय रहा है। बचपन से ही मैं जिस परिवेश में रहता आया हूँ, मुण्डारी भाषा का व्यवहार होता आ रहा है, परन्तु स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान मुझे यह आभास हुआ कि मुण्डारी भाषा एक बहुत ही समृद्ध भाषा है जिसकी गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता है। आरंभ में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, जैसे कि पाठ्य सामग्री का अभाव आदि। कालान्तर में मुण्डारी भाषा को समझने का प्रयास किया तो पाया कि मुण्डारी भाषा में बहुत सी विशिष्टताएँ हैं जिस पर शोध करने की आवश्यकता है। भाषा एवं व्याकरणिक पक्ष मुझे हमेशा से आकर्षित करता रहा है। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मैंने निर्णय लिया कि मुझे मुण्डारी के भाषा विज्ञान पर अध्ययन करना चाहिए। चुंकि मुण्डारी भाषा की कई उपबोलियाँ जैसे हासादाः, तमड़िया, नागुरी एवं केराः हमारे समक्ष थी तो मैंने यह महसूस किया कि हासादाः मुण्डारी पर अध्ययन केन्द्रित करना अपेक्षित होगा। क्यांेकि हासादाः मुण्डारी प्रारंभ से ही अपने मौलिक स्वरूप में लिखित रूप में व्यवहृत होता आ रहा है तथा इसी बोली में अधिकतर लिखित प्रमाण पाये जाते हैं। पूर्व के लेखक, रचनाकारों ने भी हासादाः को ही मानक स्वरूप देने का प्रयास किया है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मैंने कई मित्रों, गुरूजनों तथा शोध निर्देशक से विमर्श किया तो उन्होंने मुझे हासादाः मुण्डारी के भाषा विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करने का सुझाव दिया गया। तत्पश्चात् मैंने हासादाः मुण्डारी के भाषा विज्ञान पर शोध अध्ययन करने का निर्णय लिया।

शोध समस्या:

मुण्डा भाषा का क्षेत्र विस्तार व्यापक है, एवं यह भाषा क्षेत्रीय भाषा, (यथा तमड़िया अथवा लातार मुण्डारी का पंचपरगना, बांगला से, नागुरी मुण्डारी का नागपुरी तथा खड़िया भाषा से, केराः मुण्डारी का कुड़ुख एवं अन्य) संस्कृति एवं सभ्यता के संपर्क में रहा है, जिनसे इस भाषा की क्षेत्रगत भिन्नताएं दिखाई पड़ती है। ऐसे में हासादाः मुण्डारी की मौलिकता को बनाए रखने चुनौतियां हमेशा बनी रहती है।

शोध/अन्वेषण का उद्देष्य एवं प्रयोजन - प्रस्तावित शोध प्रबंध से निम्नलिखित उद्देष्यों के पूरा होने की संभावना है -

(1) मुण्डारी भाषा एक प्राचीन और समृद्ध भाषा है, जिसमें भाषा की की ध्वनिगत, शाब्दिक तथा व्याकरणिक सूक्ष्मताएँ पायी जाती हैं, जिसे सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण की आवश्यकता है।

(2) सभ्यता के विकास के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक एकता हेतु भाषा के मौलिक स्वरूप का वैज्ञानिक तथ्यों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।

(3) हासादाः मुण्डारी के उन मूलभूत तथ्यों को उजागर करना जिससे भाषा की विसंगतियों को दूर कर **मानक स्वरूप में लाया जा सके।**

(4) मुण्डारी भाषा के विभाजित क्षेत्रीय स्वरूप के अन्तराल को कम करने तथा मानक भाषा का दृढ़ीकरण किया जा सकेगा ।

शोध परिकल्पना:

मुण्डारी भाषा को हम विभिन्न क्षेत्रों में कई रूपों में पाते हैं। जिनमें से हासादाः मुण्डारी भी एक है। इनमें बहुत सी शाब्दिक भिन्नताएँ एवं विशिष्टताएँ हैं जो मानव समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करने की आवषश्यकता है। इन भाषायी सूक्ष्मताओं एवं विषिष्टताओं को एकसूत्र में बांधकर, उनके वैज्ञानिक पक्षों को उजागर कर समाज को समर्पित करना मेरा ध्येय है। अब तक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में बहुत कम काम हुआ है जिस कारण क्षेत्रीय रूपों का गहन अध्ययन एवं सूक्ष्म विश्लेषण की आवष्यकता है। विस्तृत शोध एवं विवरण देकर मुण्डा समाज के भाषायी पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन करने का प्रयत्न किया जाएगा।

शोध प्रविधि:

शोध के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का आधार लिया जाएगा -

(1) क्षेत्रीय अध्ययन/सर्वेक्षण के लिए साक्षात्कार,

(2) अवलोकन विधि

(3) प्रश्नावाली

(4) साक्षात्कार प्रविधि

इसके अतिरिक्त

(1) भाषा वैज्ञानिक पद्धति

(2) आलोचनात्मक पद्धति एवं

(3) तुलनात्मक अध्ययन पद्धति

(4) विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति को आधार माना जाएगा ।

(5) संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन - अन्वेषण या शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए पुस्तकालय अध्ययन, जिसमें संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन किया जाएगा।

सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आनेवाले उपकरण:

कैमरा, मोबाईल, लैपटाप, नकशा, प्रश्नसूची, सूचनादाता, पत्र व्यवहार, समाचार पत्र, जिला गजेटियर आदि।

अनुसंधान प्रारूप:

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु निम्नलिखित शोध का आधार लिया जाएगा -

(1) अन्वेषणात्मक एवं निरूपणात्मक अनुसंधान

(2) विश्लेषणात्मक एवं निदानात्मक अनुसंधान

भविष्य के संभावित कार्य:

प्रस्तुत शोध कार्य पूरा करने पर तथा प्रकाशित होने पर अनेक कार्यों की संभावनाएँ हैं -

(1) मुण्डा समाज में भाषा के प्रति मानव समुदाय में एक नई आषा का संचार होगा, तुलनात्मक शोध के लिए संबंधित मार्ग प्रशस्त होगा।

(2) भाषायी सूक्ष्मताओं के प्रति लोगों में जिज्ञासा बढेगी और समाज के प्रति समादर एवं निष्ठा का विकास होगा।

(3) भाषायी कार्यों के प्रति भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

हासादाः मुण्डारी का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

शोध कार्य को निम्नांकित प्रस्तावित अध्यायों में प्रस्तुत किया जाएगा -

प्रस्तावना

आभार

शोध विषय की प्रेरणा

औचित्य

उद्देश्य

शोध का महत्व

शोध विधि

साहित्य अवलोकन

प्रथम अध्याय:

मुण्डा जनजाति: एक परिचय

- (क) प्रजाति
- (ख) भाषा
- (ग) क्षेत्र
- (घ) जनसंख्या
- (ङ) आगमन और विस्तार
- (च) भौगोलिक स्थिति
- (छ) सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति

द्वितीय अध्याय:

- मुण्डारी भाषा का वर्गीकरण
  - आकृति के आधार पर
  - परिवार के आधार पर

तृतीय अध्यायः

हासादाः मुण्डारी के ध्वनि समूह

मूल स्वर

संयुक्त स्वर

व्यंजन

स्पर्ष व्यंजन

स्पर्ष   संघर्षी

नासिक्य

पाश्र्विक

लुंठित

उद्विप्त

उष्म

संघर्षी

चतुर्थ अध्यायः

हासादाः मुण्डारी का शब्द समूह व उनका वर्गीकरण

रचना के आधार पर

अर्थ के आधार पर

व्याकरण के आधार पर

उद्गम के आधार पर

पंचम अध्यायः

हासादाः मुण्डारी का रूप/पद विज्ञान

शब्द

पद

संबंधतत्व

संबंध तत्व के प्रकार

रूप परिवर्तन

षष्टम अध्यायः

हासादाः मुण्डारी का वाक्य विज्ञान

वाक्य के अंग

उद्‌देश्य, विधेय

वाक्य रचना

पदक्रम या शब्दक्रम

वाक्यों के प्रकार

योगात्मक

अयोगात्मक

सरल वाक्य

मिश्र वाक्य

संयुक्त वाक्य

सप्तम अध्याय:

हासादाः मुण्डारी का अर्थ विज्ञान

शब्द और अर्थ का संबंध

अर्थ प्रतीति

अर्थ बोध के साधन

अर्थ परिवर्तन के प्रकार

अष्टम अध्याय:

लिपि

मुण्डारी लिपि की उपयोगिता एवं समस्याएँ

उपसंहार:

परिशिष्ट

1.आधार ग्रन्थ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

2.छायाप्रति-नक्षा, चित्र, पाण्डुलिपि, संबंधित गजेटियर आदि।

3.सक्षात्कार विवरण

4.चित्रावली

नोट - शोध प्रस्ताव में अध्यायों का न्युनाधिकरण किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डा. अजीत मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग,
रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

विशेश्वर मुण्डा
यूजीसी नेट/सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग,
सिमडेगा महाविद्यालय, सिमडेगा
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथ सूची

1.ओसादा तोषिकी - ए रिफरेन्श ग्रामर आॅफ मुण्डारी, टोकयो, 1992

2. ग्रियर्सन, जाॅर्ज, लिंग्विस्टिक सर्वे आॅफ इण्डिया, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, नई दिल्ली, 1967

3.तिवारी, भोलानाथ - भाषा विज्ञान, किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, 2008

4.नाग, बी.बी.- मुण्डारी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन,

5.बड़ायऊद, मनसिद्ध - नवा होड़ो जगर मुंडि, काथलिक प्रेस, राँची, 2025

6.भट्टाचार्य, सुधिभूषण - स्टडीज इन कंपैरिटिव मुण्डा लिंग्विस्टक, इंडियन इंस्टीच्युट आफ एडवांस स्टडी, शिमला, 1975

7.मित्र परिमल - संताली, द बेस आफ वल्ड लैंग्वेजेज, फाॅर्म के.एल.एम., कोलकाता, 1988

8.मुण्डा रामदयाल - मुण्डारी व्याकरण, छोटानागपुर प्रकाषन केन्द्र, रांची, 1988

9.मुण्डू, एम. एम. - संक्षिप्त मुण्डारी व्याकरण, रांची 1979

10.सोय, बिरेन्द्र कुमार - मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भाषिक संरचना,

मुण्डारी भाषा साहित्य के विकास में पाष्चात्य भारतीय एवं मुण्डा विद्वानों का योगदान,

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.अहमद जे0 - बिहार के आदिवासी, दिल्ली, 1957

2.अग्रवाल, कृष्ण गोपाल - सामान्य मानवषास्त्र, आगरा बुक डिपो, आगरा, 1991

3.एल्विन, वेरियर - रिलिजन आॅफ एन इंडियन ट्राइब, बम्बई, 1955

4.ओड़ेया, मेनस राम - सिङबोंगा ओड़ोः एटाः-एटाः बोंगाको, 1975

5.केरकेट्टा, निकोदिम - बइअंकिर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1981

6.केशरी, बी.पी. प्रसाद, छोटानागपुर का इतिहास, रांची, 1979

7.चटर्जी, सुनीति कुमार, भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी।

8.दिनकर, रामधारी सिंह - संस्कृति के चार अध्याय, पुनर्मुद्रण, इलाहाबाद, 2002

9.पाण्डेय, कैलाष नाथ, भाषा-विज्ञान का रसायन, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1, 2012

10.पोनेट, पी. इ.डी. - द मुण्डा वल्ड, कैथोलिक प्रेस, रांची, 1978

11.पोनेट, पी. इ.डी. - सिङबोंगा एण्ड द स्पिरिट वर्ल्ड आफ द मुण्डाज - रांची
12.मिंज, दिवाकर - मुण्डा एवं उरांव का धार्मिक इतिहास, दिल्ली, 1996
13.मुण्डू, एम.एम.- मुण्डारी टुङकोढारि, काथलिक प्रेस, रांची, 1995
14.राय, एस. सी. - दी मुण्ड एण्ड देयर कन्ट्री, 1912
15.विद्यार्थी, एल.पी. - बिहार के आदिवासी, बिहार राज्य परिषद्, पटना, 1968
16.विद्यार्थी, एल.पी.- कल्चरल टाइप्स इन ट्राइबल बिहार, 1956
17.हाॅफमेन, जाॅन - इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका, 16 वोल्यूम, पटना, 1930-1974
18.त्रिगुणायत, जगदीष, मुण्डा लोक कथाएँ, बिहार राज्य परिषद्, पटना, 1968

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. सेड़ां सेतेङ नवीन मुन्डू
2. संगोम डा0 वीरेन्द्र कुमार सोय
3. सरना सकम भइयाराम मुण्डस
4. सम्पड़तिंग स0 अ0 वि0 दि0 हँस
5. जोहार स0 अ0 वि0 दि0 हँस
6. उलगुलान डाॅ0 सत्य नारायण मुण्डा
7. जावा डाली भाइया राम मुण्डा
8. बा गनलङ भाइया राम मुण्डा